



RashiDaily

विवाह भविष्यवाणी रिपोर्ट

आपका नाम

विंशोत्तरी दशा · वैदिक विवाह समय

अभी का विवाह काल

अभी सक्रिय: अक्टूबर 2026 से अप्रैल 2028 तक

विंशोत्तरी दशा की जिस अवधि को परंपरा विवाह से जोड़ती है, वह रिपोर्ट खरीदे जाने के दिन पहले से चल रही थी। शास्त्रीय ग्रंथ ऐसे समय को वह अवधि मानते हैं जब विवाह से जुड़े मामले अधिक ध्यान में आते हैं। किसी भी अवधि में क्या घटेगा, यह कुंडली से कहीं अधिक बातों पर निर्भर करता है।

आपकी जन्म तिथि और समय

आपका जन्म स्थान

rashidaily.com



आपकी विवाह रूपरेखा

इस रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष एक ही जगह हैं, और हर निष्कर्ष अलग पृष्ठ पर समझाया गया है

आपकी जन्म कुंडली के आधार पर यह रिपोर्ट उन भावों और ग्रह-स्थितियों का विश्लेषण करती है जिन्हें वैदिक ज्योतिष विवाह से जोड़ा है: 7वां भाव, उसका स्वामी ग्रह, शुक्र और विंशोत्तरी दशा। यह पारंपरिक वैदिक पद्धतियों पर आधारित विवाह-समय का विश्लेषण है, और हर निष्कर्ष के साथ यह भी दिया गया है कि उसे किस ग्रंथ या परंपरा से जोड़ा जाता है। इसमें दिखाए गए कालखंड और कारक ज्योतिषीय संकेत हैं, निश्चित परिणाम नहीं।

अभी सक्रिय

अक्टूबर 2026 से अप्रैल 2028 तक

प्रबल विवाह संकेत • बृहस्पति महादशा, बुध अंतरदशा

अन्य विवाह संकेत अवधियाँ: **अप्रैल 2028 से मार्च 2029 तक** (विवाह संकेत); **मार्च 2029 से नवम्बर 2031 तक** (प्रबल विवाह संकेत); **नवम्बर 2031 से अक्टूबर 2036 तक** (विवाह संकेत)

विवाह के समय की प्रवृत्ति

कुछ विलंब कारक

कुंडली में मिले: कुल 7 में से 2

प्रेम विवाह के संकेत

कोई संकेत नहीं मिले

कुंडली में मिले: कुल 4 में से 0

कुंडली में आपका जीवनसाथी

7वें भाव में मिथुन राशि, स्वामी बुध

7वें भाव में कोई ग्रह नहीं

सशक्त पक्ष और चुनौतियाँ

मिला-जुला

अनुकूल कारक: 0 • प्रतिकूल कारक: 3

मंगल दोष

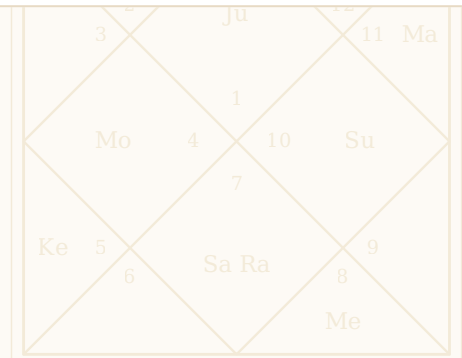
उपस्थित नहीं

लग्न से 11वें भाव में मंगल

वर्तमान दशा अवधि

बृहस्पति / बुध

दिनांक अप्रैल 2028 तक

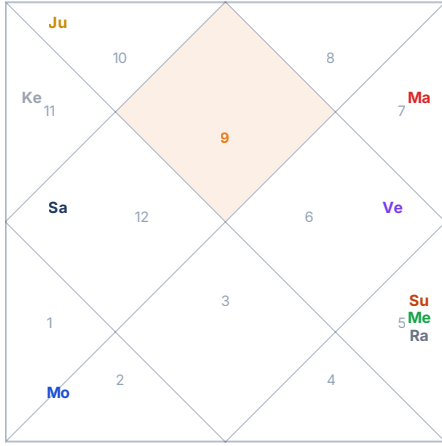




आपकी जन्म कुंडली

निरयण (लाहिरी) स्थितियाँ और 7वां भाव (विवाह भाव)

D1 • राशि चार्ट



Su सूर्य Mo चंद्र Ma मंगल Me बुध Ju बृहस्पति Ve शुक्र
Sa शनि Ra राहु Ke केतु

लग्न	धनु
राशि	वृषभ
नक्षत्र	मृगशिरा-1
7वां भाव	मिथुन
सप्तमेश	बुध

ग्रह	राशि	भाव
सूर्य	सिंह	9
चंद्र	वृषभ	6
मंगल	तुला	11
बुध	सिंह R	9
बृहस्पति	मकर R	2
शुक्र	कन्या	10
शनि	मीन R	4
राहु	सिंह R	9
केतु	कुंभ R	3

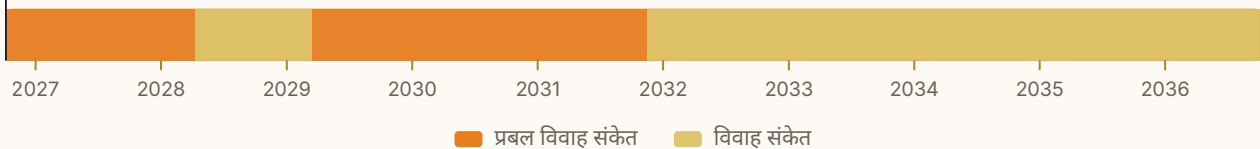




विवाह काल

आपकी दशा में परंपरा के अनुसार विवाह से जुड़े कालखंड, अक्टूबर 2026 से अक्टूबर 2036 तक

खरीद की तारीख



अक्टूबर 2026 से अप्रैल 2028 तक

प्रबल विवाह संकेत • अभी सक्रिय

बृहस्पति महादशा, बुध अंतरदशा

बृहस्पति मुख्य बृहस्पति, पति का कारक ग्रह

बुध मुख्य सप्तमेश

इस खंड की महादशा और अंतरदशा के दोनों स्वामी आपकी कुंडली में विवाह से जुड़े हैं, और अंतरदशा का स्वामी उनमें सबसे महत्वपूर्ण ग्रहों में से एक है। जिन अवधियों का यह रिपोर्ट विश्लेषण करती है, शास्त्रीय परंपरा उन्हें विवाह के सबसे सीधे संकेतों में गिनती है।

अप्रैल 2028 से मार्च 2029 तक

विवाह संकेत

बृहस्पति महादशा, केतु अंतरदशा

बृहस्पति मुख्य बृहस्पति, पति का कारक ग्रह

इस अवधि में विवाह का संकेत है, लेकिन वह प्रबल संकेत जितना पूर्ण नहीं है: या तो इसके दो ग्रहों में से केवल एक ही आपकी कुंडली में विवाह से जुड़ा है, या वह संबंध सहायक स्तर का है।

मार्च 2029 से नवम्बर 2031 तक

प्रबल विवाह संकेत

बृहस्पति महादशा, शुक्र अंतरदशा

बृहस्पति मुख्य बृहस्पति, पति का कारक ग्रह

शुक्र मुख्य शुक्र, विवाह कारक ग्रह

इस खंड की महादशा और अंतरदशा के दोनों स्वामी आपकी कुंडली में विवाह से जुड़े हैं, और अंतरदशा का स्वामी उनमें सबसे महत्वपूर्ण ग्रहों में से एक है। जिन अवधियों का यह रिपोर्ट विश्लेषण करती है, शास्त्रीय परंपरा उन्हें विवाह के सबसे सीधे संकेतों में गिनती है।



विवाह काल

जारी

नवम्बर 2031 से अक्टूबर 2036 तक

विवाह संकेत

बृहस्पति महादशा, सूर्य अंतरदशा; बृहस्पति महादशा, चंद्र अंतरदशा; बृहस्पति महादशा, मंगल अंतरदशा; बृहस्पति महादशा, राहु अंतरदशा

बृहस्पति **मुख्य** बृहस्पति, पति का कारक ग्रह

सूर्य **सहायक** सप्तमेश जिस राशि में स्थित है, उस राशि का स्वामी

चंद्र **सहायक** चंद्र

इस अवधि में विवाह का संकेत है, लेकिन वह प्रबल संकेत जितना पूर्ण नहीं है: या तो इसके दो ग्रहों में से केवल एक ही आपकी कुंडली में विवाह से जुड़ा है, या वह संबंध सहायक स्तर का है।

नमूना





विवाह के समय की प्रवृत्ति और प्रेम विवाह के संकेत

आपकी कुंडली के प्रत्येक कारक और उनसे जुड़ा पारंपरिक अर्थ

विवाह के समय की प्रवृत्ति

कुछ विलंब कारक

आपकी कुंडली में परंपरा के अनुसार देर से विवाह से जुड़े दो कारक दिखते हैं। यह एक सामान्य संयोजन है, जो लगभग एक-तिहाई कुंडलियों में मिलता है; फिर भी विवाह-समय तय करने में दशा-अंतरदशा इस गिनती से अधिक मायने रखती है।

शुक्र पर शनि शनि

शनि विवाह कारक शुक्र के साथ युति में है या उस पर दृष्टि डालता है। कई ज्योतिषी इस योग को विवाह के देर से होने और विवाह के प्रति अधिक गंभीर, सोच-समझकर अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण से जोड़ते हैं।

चंद्र पर शनि शनि

शनि चंद्र के साथ युति में है या उस पर दृष्टि डालता है। कुछ ज्योतिषी इसे भावनात्मक स्तर पर अधिक सतर्कता और विवाह के देर से होने से जोड़ते हैं।

प्रेम विवाह के संकेत

कोई संकेत नहीं मिले

आधुनिक ज्योतिषी जिन चार संकेतों को प्रेम विवाह से जोड़ते हैं, उनमें से कोई भी आपकी कुंडली में नहीं मिलता। इससे यह तय नहीं होता कि विवाह प्रेम विवाह होगा या परिवार द्वारा तय विवाह; बस इतना है कि ये विशेष संकेत अनुपस्थित हैं, और देखे गए स्रोत परिवार द्वारा तय विवाह के लिए कोई निश्चित कसौटी नहीं देते।





कुंडली में आपका जीवनसाथी

7वें भाव, उसके स्वामी और उसमें स्थित ग्रहों से जीवनसाथी के बारे में पारंपरिक संकेत

7वें भाव की राशि: मिथुन

आपका 7वां भाव मिथुन राशि में है। परंपरा के अनुसार, यह बुध-शासित वायु राशि जीवनसाथी के स्वभाव में जिज्ञासा, मिलनसारिता और वाक्पटुता दर्शाती है। इस स्थिति का संबंध संवाद पर पनपने वाले रिश्ते से माना जाता है।

सप्तमेश: बुध

आपके 7वें भाव का स्वामी बुध है। परंपरा के अनुसार, इससे जीवनसाथी के स्वभाव में बुद्धिमत्ता, हास्य-बोध और संवाद-कौशल का संकेत मिलता है।

7वें भाव में स्थित ग्रह

आपके 7वें भाव में कोई ग्रह नहीं है, और यह सामान्य बात है। तब परंपरा जीवनसाथी को 7वें भाव की राशि और उसके स्वामी के आधार पर समझती है, जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।





सशक्त पक्ष और चुनौतियाँ

शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार 7वें भाव के अनुकूल और प्रतिकूल कारक

मिला-जुला. आपकी कुंडली में सप्तम भाव के लिए अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों तरह के कारक दिखते हैं, और यह सबसे सामान्य व्याख्या है: लगभग आधी कुंडलियाँ इसी श्रेणी में आती हैं। शास्त्रीय ग्रंथ ऐसे कारकों को पूरी कुंडली के साथ जोड़कर देखते हैं, अलग-अलग नहीं।

अनुकूल कारक

इस रिपोर्ट में जाँचे गए कारकों में से कोई भी नहीं

प्रतिकूल कारक

सप्तमेश से पाप ग्रह की युति या दृष्टि सूर्य, राहु

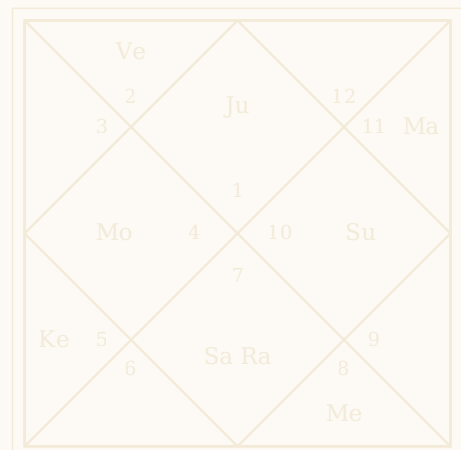
एक पाप ग्रह आपके सप्तमेश के साथ युति में है या उस पर दृष्टि डाल रहा है। शास्त्रीय ग्रंथ इसे सप्तमेश की पीड़ा मानते हैं।

शुक्र पर पाप ग्रह की दृष्टि शनि

शुक्र पर एक पाप ग्रह की दृष्टि है। फलदीपिका इसे विवाह कारक शुक्र की पीड़ा मानती है।

पाप ग्रहों के बीच शुक्र

शुक्र दो पाप ग्रहों के बीच घिरा हुआ है, यानी पापकर्तरी योग में है। फलदीपिका शुक्र की ऐसी स्थिति को पीड़ित मानती है।





मंगल दोष

RashiDaily परंपरा के अंतर्गत लग्न से वर्गीकृत। चंद्र और शुक्र को अतिरिक्त पारंपरिक जाँचों के रूप में दिखाया गया है और वे परिणाम नहीं बदलते हैं।



मंगल दोष

उपस्थित नहीं

संदर्भ	मंगल भाव में	परिणाम
लग्न प्राथमिक	11	पहचाना नहीं गया
चंद्र	6	पहचाना नहीं गया
शुक्र	2	पहचाना गया

इस रिपोर्ट में अपनाई गई परंपरा के अनुसार, मंगल आपके लग्न से 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें भाव में नहीं है, इसलिए आपकी कुंडली में मंगल दोष नहीं पाया गया है। चंद्र और शुक्र की जाँचें संदर्भ के लिए दिखाई गई हैं, और वे इस निष्कर्ष को नहीं बदलतीं।





महत्वपूर्ण कालखंड

आने वाले दस वर्षों की हर दशा अवधि और परंपरा के अनुसार विवाह से जुड़े कालखंड

से	तक	अवधि	विवाह
अक्टूबर 2026	अप्रैल 2028	बृहस्पति / बुध	प्रबल विवाह संकेत
अप्रैल 2028	मार्च 2029	बृहस्पति / केतु	विवाह संकेत
मार्च 2029	नवम्बर 2031	बृहस्पति / शुक्र	प्रबल विवाह संकेत
नवम्बर 2031	सितम्बर 2032	बृहस्पति / सूर्य	विवाह संकेत
सितम्बर 2032	जनवरी 2034	बृहस्पति / चंद्र	विवाह संकेत
जनवरी 2034	दिसम्बर 2034	बृहस्पति / मंगल	विवाह संकेत
दिसम्बर 2034	अक्टूबर 2036	बृहस्पति / राहु	विवाह संकेत

नमूना





इन दशाओं के ग्रह

संबंधों पर हर दशा-स्वामी का पारंपरिक प्रभाव

बृहस्पति

बृहस्पति की दशाएँ परंपरा के अनुसार ज्ञान, विस्तार, संतान और अच्छे परामर्श से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें सहारे का समय माना जाता है, और स्त्री की कुंडली में बृहस्पति को पति का कारक भी माना जाता है।

बुध

बुध की दशाएँ परंपरा के अनुसार वाणी, शिक्षा और आदान-प्रदान से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें ऐसे समय के रूप में देखा जाता है जब संवाद और मित्रता प्रमुख हो जाते हैं।

केतु

केतु की दशाएँ परंपरा के अनुसार विरक्ति, आत्मचिंतन और छोड़ देने की प्रवृत्ति से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें अंतर्मुखी समय माना जाता है, जब सांसारिक बातें कम महत्वपूर्ण लग सकती हैं।

शुक्र

शुक्र की दशाएँ परंपरा के अनुसार प्रेम, सामंजस्य, सुविधा और साझेदारी से जुड़ी मानी जाती हैं। ये वे दशाएँ हैं जिन्हें परंपरा हर कुंडली में विवाह से सबसे सहज रूप से जोड़ती है।

सूर्य

सूर्य की दशाएँ परंपरा के अनुसार पहचान, अधिकार और पिता-पक्ष से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें ऐसे समय के रूप में देखा जाता है जब स्वतंत्रता और मान-प्रतिष्ठा अधिक सामने आती है।

चंद्र

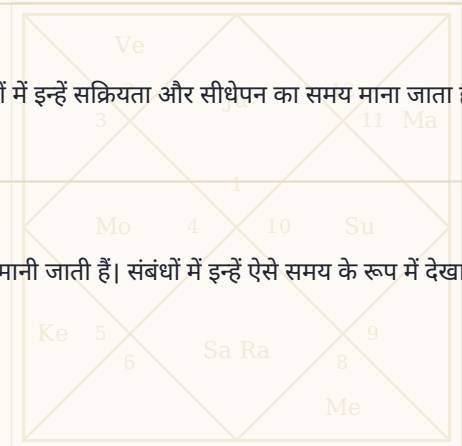
चंद्र की दशाएँ परंपरा के अनुसार मन, भावनाओं, घर और माता से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें ऐसे समय के रूप में देखा जाता है जब भावनात्मक ज़रूरतें और पारिवारिक रिश्ते प्रमुख हो जाते हैं।

मंगल

मंगल की दशाएँ परंपरा के अनुसार ऊर्जा, पहल और संपत्ति से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें सक्रियता और सीधेपन का समय माना जाता है, जब धैर्य की परीक्षा हो सकती है।

राहु

राहु की दशाएँ परंपरा के अनुसार महत्वाकांक्षा, बदलाव और अपरिचित अनुभवों से जुड़ी मानी जाती हैं। संबंधों में इन्हें ऐसे समय के रूप में देखा जाता है जब अपरंपरागत चुनाव या अचानक मोड़ आ सकते हैं।

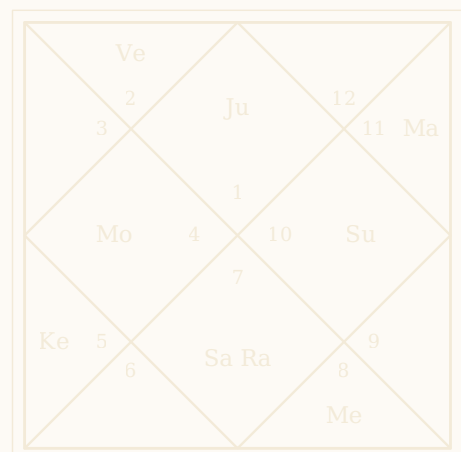




इन दशाओं के चयन का आधार

शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार आपकी कुंडली में विवाह से जुड़ी ग्रह-दशाएँ

ग्रह	महत्त्व	यह क्यों महत्वपूर्ण है
बृहस्पति	मुख्य	बृहस्पति, पति का कारक ग्रह स्त्री की कुंडली में कई आधुनिक ज्योतिषी बृहस्पति को, शुक्र के साथ, पति का कारक भी मानते हैं। यह आधुनिक प्रथा है, इस रिपोर्ट में आधार बने शास्त्रीय अध्यायों का नियम नहीं, और स्त्री के रूप में दी गई कुंडलियों में रिपोर्ट इसी दृष्टि को अपनाती है।
बुध	मुख्य	सप्तमेश आपके 7वें भाव, यानी विवाह भाव, का स्वामी ग्रह। फलदीपिका सप्तमेश की अवधि को उन शुरुआती अवधियों में मानती है जिनमें विवाह से जुड़े विषय सामने आते हैं।
चंद्र	सहायक	चंद्र चंद्र वह ग्रह है जिसे फलदीपिका विवाह के समय शुक्र के साथ जोड़ती है। इस रिपोर्ट में इसे सहायक महत्व दिया गया है, क्योंकि यहाँ यह नहीं देखा जाता कि दोनों में से किसका बल अधिक है।
सूर्य	सहायक	सप्तमेश जिस राशि में स्थित है, उस राशि का स्वामी जिस राशि में आपका सप्तमेश स्थित है, उस राशि का स्वामी ग्रह। फलदीपिका विवाह-समय पर विचार करते हुए उस पर भी ध्यान देती है। इस रिपोर्ट में इसे सहायक महत्व दिया गया है।
शुक्र	मुख्य	शुक्र, विवाह कारक ग्रह शुक्र को परंपरा हर कुंडली में विवाह कारक ग्रह और जीवनसाथी का कारक मानती है। बृहत् पराशर होरा शास्त्र में जीवनसाथी का आकलन शुक्र से गिने गए 7वें भाव से किया जाता है, और शुक्र चाहे जिन भावों का स्वामी हो, उसकी दशाओं को विवाह के लिए देखा जाता है।





RashiDaily

इस रिपोर्ट के बारे में

यह पारंपरिक वैदिक पद्धतियों पर आधारित विवाह-समय का ज्योतिषीय विश्लेषण है। नीचे बताया गया है कि आपकी कुंडली की गणना कैसे की गई और यह रिपोर्ट किन परंपरागत मानदंडों का पालन करती है।

कुंडली की गणना की विधि

आपकी कुंडली स्विस इफेमेरिस से, लाहिरी अयनांश का उपयोग करके तैयार की गई है। यह अयनांश भारत में सबसे अधिक प्रचलित है। ग्रह-स्थितियों की तुलना NASA के JPL Horizons से की गई है और वे एक आर्कसेकंड तक मेल खाती हैं। लग्न से गिनी गई पूर्ण राशि भाव पद्धति में हर भाव एक पूरी राशि का होता है, और जीवन के काल विंशोत्तरी दशा के अनुसार देखे जाते हैं। इन कालों की तिथियाँ आपके जन्म समय पर निर्भर करती हैं: जन्म समय के कुछ मिनटों का अंतर उन्हें कई सप्ताह आगे-पीछे कर सकता है।

विवाह काल चुनने के मानदंड

आपकी कुंडली में विवाह से जुड़े कुछ ग्रह मुख्य माने जाते हैं: सप्तमेश, सप्तम भाव में स्थित कोई भी ग्रह, शुक्र, और स्त्री की कुंडली में बृहस्पति। सप्तम भाव पर दृष्टि करने वाले ग्रह, जिस राशि में सप्तमेश बैठा है उसका राशि स्वामी, और चंद्र सहायक ग्रह माने जाते हैं। विंशोत्तरी दशा की हर अवधि का एक महादशा-स्वामी और एक अंतरदशा-स्वामी होता है। जब अंतरदशा-स्वामी मुख्य ग्रह हो और महादशा-स्वामी मुख्य ग्रह या सहायक ग्रह हो, तब वह अवधि प्रबल विवाह संकेत मानी जाती है। जब महादशा-स्वामी या अंतरदशा-स्वामी मुख्य ग्रह हो और प्रबल विवाह संकेत की शर्तें पूरी न होती हों, तब वह अवधि विवाह संकेत मानी जाती है। समान संकेत वाली लगातार अवधियाँ मिलकर एक विवाह काल बनाती हैं। इस रिपोर्ट में खरीद के बाद के केवल दस वर्षों पर ही विचार किया जाता है, और 18 वर्ष की आयु से पहले का काल शामिल नहीं किया जाता।

कुंडली के कारक चुनने के मानदंड

इस रिपोर्ट में बताए गए मजबूत पक्ष और चुनौतियाँ बृहत् पराशर होरा शास्त्र और फलदीपिका पर आधारित हैं। विलंब कारक वे हैं, जिन पर इस रिपोर्ट के लिए अध्ययन किए गए आधुनिक स्रोतों में से कम-से-कम तीन सहमत हैं। कौन-से ग्रह शुभ और पाप ग्रह माने जाएँगे, यह बृहत् पराशर होरा शास्त्र के अनुसार तय होता है, और किसी ग्रह की दृष्टि पूरी राशि पर मानी जाती है, किसी सटीक डिग्री पर नहीं।

प्रेम विवाह के संकेत

प्रेम-विवाह के संकेत आधुनिक ज्योतिषीय परंपरा से लिए गए हैं। इस रिपोर्ट के लिए देखे गए स्रोत इन्हें शास्त्रीय ग्रंथों में नहीं पाते, इसलिए इन्हें आधुनिक व्याख्या के रूप में दर्ज किया गया है।

रिपोर्ट का परिचय

इस रिपोर्ट में दिए गए काल और कारक पारंपरिक वैदिक तकनीकों से निकले ज्योतिषीय संकेत हैं, निश्चित परिणाम नहीं। पूरी कुंडली और किसी अनुभवी ज्योतिषी की समीक्षा, यहाँ बताए गए किसी एक कारक या काल से अधिक महत्व रखती है।